Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ गणगौर ईसर-गौरा पूजा ॥

॥ जय ईसर-गौरा ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ पूजा की तैयारी और सामग्री ॥

१. पर्व का समय

गणगौर में ईसर यानी शिव और गौरा यानी पार्वती की पूजा की जाती है। राजस्थान में होली के बाद आरंभ होने वाली आराधना का मुख्य उत्सव चैत्र शुक्ल तृतीया को होता है। परिवार और क्षेत्र के अनुसार पूजा के दिनों की गिनती अलग मिलती है; स्थानीय पंचांग देखें।

२. आवश्यक सामग्री

स्वच्छ चौकी, ईसर-गौरा की मिट्टी या लकड़ी की प्रतिमा अथवा चित्र, जलपात्र, फूल, अक्षत, रोली-कुमकुम, हल्दी, चंदन, मेहंदी, दीप, नैवेद्य और साफ वस्त्र रखें। दूब, गेहूँ या जौ के ज्वारे, चुनरी, श्रृंगार और गेहूँ के मीठे गुणे कुछ घरों में विशेष रूप से चढ़ते हैं।

३. प्रतिमा और ज्वारे

प्रतिमाओं को चौकी पर स्थिर रखें और उपलब्ध वस्त्र से सजाएँ। ज्वारे बोने की परंपरा हो तो छोटे पात्र में गेहूँ या जौ उगाएँ, प्रतिदिन थोड़ी नमी दें। पत्तियों या दूब के साथ जल चढ़ाने की रीति भी प्रचलित है। ये सामग्री हर घर में एक जैसी अनिवार्य नहीं है।

मिट्टी की प्रतिमा या चित्र को सजाते समय दीप की लौ से दूरी रखें। पूजा के लिए स्वच्छ और सुरक्षित स्थान चुनें।

॥ ईसर-गौरा की पूजा और विदाई ॥

४. पूजा का संकल्प

स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें। गणेशजी का स्मरण कर ईसर-गौरा के सामने परिवार, संबंधों और सबके कल्याण का संकल्प लें। प्रतिमा या चित्र के सामने जल प्रतीक रूप से अर्पित करें; रंगे हुए चित्र पर जल सीधे न डालें।

५. अर्पण और कथा

रोली, हल्दी, कुमकुम, अक्षत, फूल, दूब तथा घर में उपलब्ध नैवेद्य चढ़ाएँ। गौरा को मेहंदी या चुनरी और ईसर को पुष्प या चंदन अर्पित करने की रीति है। शिव-पार्वती का स्मरण, गणगौर के लोकगीत, कथा और आरती करें।

६. उत्सव का समापन

मुख्य तृतीया पर सामूहिक गीत और ईसर-गौरा की सवारी या प्रतीकात्मक विदाई होती है। प्रतिमा के विसर्जन की रीति हो तो स्थानीय व्यवस्था और पर्यावरण नियमों का पालन करें; रासायनिक रंग तथा प्लास्टिक जल में न डालें। पुनः उपयोग योग्य प्रतिमा को घर में सम्मान से रखें।

उपवास और प्रसाद के नियम परिवार के अनुसार बदलते हैं। स्वास्थ्य के अनुकूल भोजन-पानी लें और पूजा को अपनी सामर्थ्य से करें।

॥ जय ईसर-गौरा ॥